अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के मक्तूब से माख़ूज़

शादी ख़ाना बरबादी के अस्बाब और उन का ह़ल

Shadi Khana Barbadi Ke Asbab Aur Un Ka Hal (Hindi)

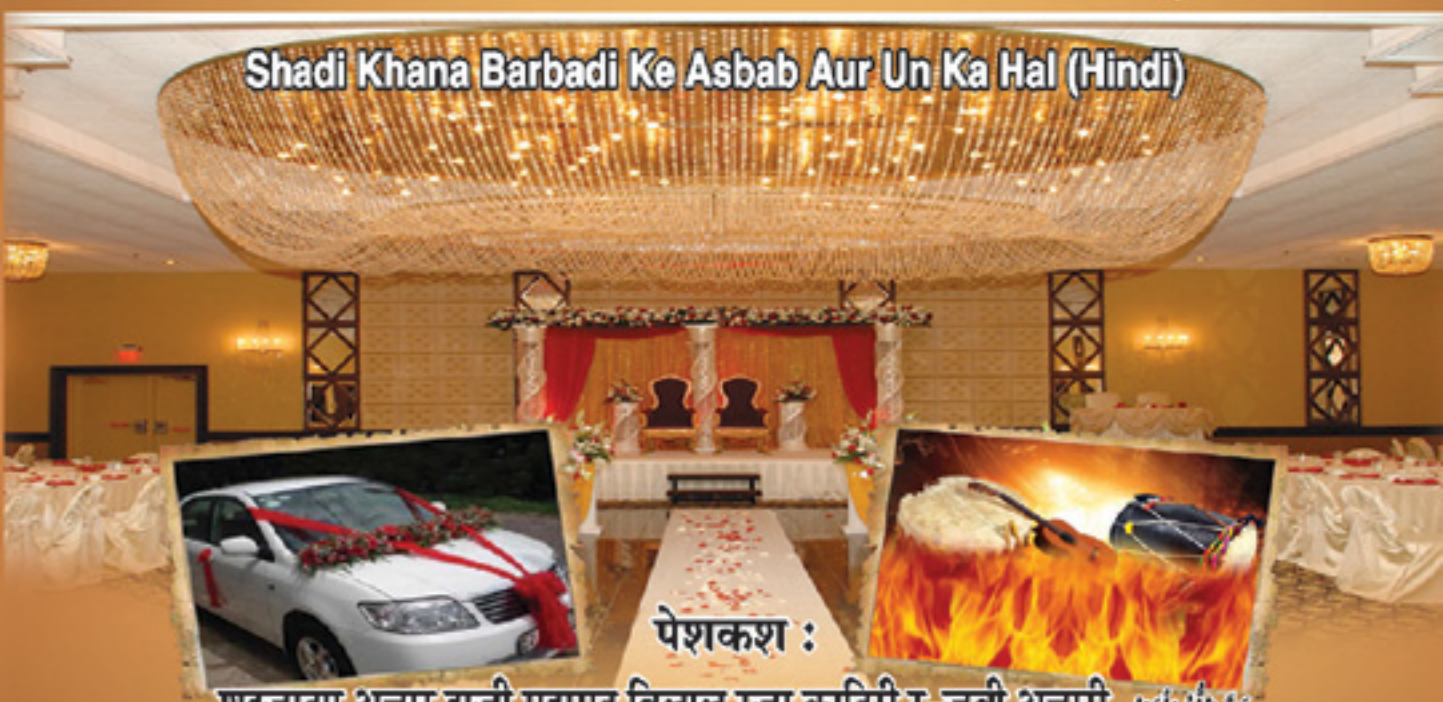

पेशकश :

शहज़ादए अ़त्तार ह़ाजी मुह़म्मद बिलाल रज़ा क़ादिरी र-ज़वी अ़त्तारी مدظلہ العالی

- फ़ी ज़माना शादी की तक़रीबात
- अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की अहम हिदायात
- ना क़ाबिले बरदाश्त अ़ज़ाब
- शुक्र की जगह ना फ़रमानी की आफ़ात
- इ़ब्रत नाक ह़िकायत
- बद नसीब शख़्स
- बीवी की बद अख़्लाक़ी पर सब्र
- दर्द भरी नसीह़त
- अल्लाह व रसूल عزوجل و صلی اللہ علیہ والہ وسلم की रिज़ा वाली ज़िन्दगी गुज़ारने का त़रीक़ा

مکتبۃ المدینہ ®
(دعوت اسلامی)

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम **1428** हि.

(शादी ख़ाना बरबादी के अस्बाब और उन का ह़ल)

येह रिसाला **(शादी ख़ाना बरबादी के अस्बाब और उन का ह़ल)** मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 • E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

الصلوۃ والسلام علیك یارسول اللّٰہ وعلی الك واصحابك یاحبیب اللّٰہ

तारीख़ : 2 जुमादिल आख़िर 1426 हि. **ह़वाला :** 104

तस्दीक़ नामा

الحمدللّٰہ رب العٰلمین والصلوٰۃوا لسلام علی سید المرسلین

وعلی الہ وا صحابہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

शादी ख़ाना बरबादी के अस्बाब और उन का ह़ल

(मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़र सानी की कोशिश की गई है । मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़-रबी इबारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है । अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं ।

मजलिस
तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
10 - 07 - 05

पेशे लफ़्ज़

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबा-रका मोह़ताजे तआ़रुफ़ नहीं।

आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه शरीअ़त मुत़ह्हरा और त़रीक़ते मुनव्वरह की वोह यादगारे सलफ़ शख़्सिय्यत हैं जो कि **कसीरुल करामात** बुज़ुर्ग होने के साथ साथ इ़ल्मन व अ़-मलन, क़ौलन व फ़े'लन, ज़ाहिरन व बात़िनन **अह़कामाते इलाहिय्यह** की बजा आ-वरी और **सु-नने न-बविय्यह** की पैरवी करने और करवाने की भी रोशन नज़ीर हैं। आप अपने बयानात, तह़रीरात, मल्फ़ूज़ात और मक्तूबात के ज़रीए अपने मु-तअ़ल्लिक़ीन व दीगर मुसल्मानों को इस्लाह़े आ'माल की तल्क़ीन फ़रमाते रहते हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आप के यक रंग, क़ाबिले तक़्लीद मिसाली किरदार और ताबेए़ शरीअ़त बे लाग गुफ़्तार, ने सारी दुन्या में लाखों मुसल्मानों बिल ख़ुसूस नौ जवानों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया।

चूंकि सालिह़ीन के वाक़िआ़त में दिलों की जिला, रूह़ों की ताज़गी और फ़िक्रो नज़र की पाकीज़गी पिन्हां है। लिहाज़ा उम्मत की इस्लाह़ व ख़ैर ख़्वाही के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त मजलिसे मक-त-बतुल मदीना ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ह़याते मुबा-रका के रोशन अब्वाब, म-सलन आप की इ़बादात, मुजा-हदात और तक़्वा व परहेज़ गारी के वाक़िआ़त व दीनी ख़िदमात के साथ साथ आप की ज़ाते मुबा-रका से ज़ाहिर होने वाली ब-रकात व करामात और आप की तस्नीफ़ात व मक्तूबात, मल्फ़ूज़ात व बयानात के फ़ुयूज़ात को भी शाएअ़ करने का क़स्द किया है।

इस सिल्सिले में रिसाला **''शादी ख़ाना बरबादी के अस्बाब और उन का ह़ल''** पेशे ख़िदमत है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस का बग़ौर मुत़ा-लआ़ ''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़'' की म-दनी सोच पाने का सबब बनेगा।

मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

शादी ख़ाना बरबादी के अस्बाब और उन का ह़ल

शैत़ान कितनी ही सुस्ती दिलाए मगर येह रिसाला इत़्मीनान से अव्वल ता आख़िर ज़रूर पढ़ें

आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **"ज़ियाए दुरूदो सलाम"** में फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नक़्ल फ़रमाते हैं,

"नमाज़ के बा'द ह़म्दो सना व दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से फ़रमाया, दुआ़ मांग क़बूल की जाएगी। सुवाल कर दिया जाएगा।" (سُنن النسائی ج۱ ص ۱۸۹ قدیمی کتب خانه باب المدینه کراچی)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ी ज़माना शादी की तक़रीबात

निकाह़ इस्लाम में इ़बादत है, कभी **फ़र्ज़**, कभी **वाजिब** और आ़म ह़ालात में सुन्नते मुअक्कदा है (درمختار مع ردالمحتار ج٤ ص٧٢ دارالمعرفة بیروت) लेकिन अफ़्सोस कि फ़ी

ज़माना इस सुन्नत की अदाएगी में दीगर सुन्नतों बल्कि मु-तअ़द्दद फ़राइज़ तक का ख़ून किया जाता है। आज कल शादियों की तक़रीबात में होने वाली ग़ैर शर-ई ह़-र-कतों और ग़फ़्लतों से भरपूर "रंगीन मह़फ़िलों" से कौन वाक़िफ़ नहीं! **ह़राम व फ़ुज़ूल रस्मों और बे बहा शाह ख़र्चियों के सबब ही शायद शादी ख़ाना आबादी के बजाए शादी ख़ाना बरबादी की शिकायत आ़म है,** क्यूं कि लड़के और लड़की दोनों के घरों में निकाह़ की इब्तिदा से ले कर इख़्तिताम तक बेहूदा रुसूमात के ज़रीए दुन्या और आख़िरत की बरबादी के भरपूर सामान किये जाते हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **आफ़्ताबे क़ादिरिय्यत, महताबे र-ज़विय्यत, मुह़्ये सुन्नत, क़ातेए बिदअ़त, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, वलिय्ये ने'मत, पीरे त़रीक़त, आ़लिमे शरीअ़त, परवानए शम्ए रिसालत, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी,** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने एक मक्तूब में शादी ख़ाना बरबादी के अस्बाब की त़रफ़

तवज्जोह दिलाते हुए इस्लाह़ के म–दनी फूलों से नवाज़ा है, उस मक्तूब का कुछ ह़िस्सा पेशे ख़िदमत है।

मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! आज कल **शादी** जैसी मीठी मीठी सुन्नत बहुत सारे गुनाहों में घिर चुकी है। म–सलन (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) मंगनी में लड़का अपने हाथ से मंगेतर को अंगूठी पहनाता है। येह ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। शादी में मर्द अपने हाथ मेहंदी से रंगता है, येह भी ह़राम है (माख़ूज़ फ़तावा र–ज़विय्या, जि. 23, स. 490, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर) मर्दों और औ़रतों की मख़्लूत़ दा'वतें की जाती हैं। या कहीं बराए नाम बीच में पर्दा डाल दिया जाता है। मगर फिर भी औ़रतों में ग़ैर मर्द घुस कर खाना बांटते, ख़ूब तस्वीरें बनाते हैं।

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं "हर तस्वीर बनाने वाला जहन्नम में है और हर तस्वीर के बदले जो उस ने बनाई थी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक मख़्लूक़ पैदा कर देगा जो उसे अ़ज़ाब करेगी।" (صحیح مسلم ج ۲ ص ۲۰۲ قدیمی کتب خانه کراچی)

ना क़ाबिले बरदाश्त अ़ज़ाब

आह ! आज कल शादियों में ख़ानदान की जवान लड़कियां ख़ूब नाचती गाती हैं। इस दौरान मर्द भी बिला तकल्लुफ़ अन्दर आते जाते हैं, मर्द और औ़रतें जी भर कर बद निगाही करते हैं, न ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ, न शर्मे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ।

याद रखिये ! ग़ैर मर्द, ग़ैर औ़रत को ब शह्वत देखे येह भी ह़राम और ग़ैर औ़रत, ग़ैर मर्द को ब शह्वत देखे येह भी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 201, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर) फ़िल्में डिरामे, नाच गाने ढोलकी और ''डंडिया रास'' के फंक्शन देखने वाले येह बात याद रखें कि येह ह़राम काम हैं। इन का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा, चुनान्चे हमारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मे'राज की रात एक मन्ज़र येह भी देखा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : **फिर मैं ने कुछ ऐसे लोग देखे जिन की आंखें और कान कीलों से ठुके हुए थे। दरयाफ़्त करने पर मा'लूम हुवा ''येह वोह लोग हैं जो वोह देखते हैं जो आप** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **नहीं देखते और वोह सुनते हैं जो आप** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **नहीं सुनते।''** (شرح الصدور، ص ۱۷۱ دارالکتب العلمیہ بیروت)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो गाने वाली के पास बैठे, कान लगा कर ध्यान से उस से सुने तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस के कानों में पिघला हुवा सीसा उंडेलेगा।''

(کنزالعمال رقم الحدیث ٤٠٦٦ ج١٥ ص٩٦ دارالکتب العلمیه بیروت)

फ़िल्म देखे और जो गाने सुने कील उस की आंख, कानों में ठुके

शुक्र की जगह ना फ़रमानी की आफ़ात

अफ़्सोस ! फ़िल्मी रीकॉर्डिंग के बिग़ैर आज कल शायद ही कहीं शादी होती हो। अगर कोई समझाए तो बा'ज़ अवक़ात जवाब मिलता है, **वाह साहिब ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने पहली बार ख़ुशी दिखाई है और ''गाना बाजा'' न करें, बस जी ख़ुशी के वक़्त सब कुछ चलता है !** (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

ख़बरदार मुसल्मानो ! ख़ुशी के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया जाता है कि **ख़ुशियां त़वील हों**। ना फ़रमानी नहीं की जाती, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न करे कि इस ना फ़रमानी की नुहूसत से इक्लौती बेटी दुल्हन बनने के आठवें दिन रूठ कर मैके आ बैठे और मज़ीद आठ दिन के बा'द **तीन त़लाक़ का परचा** आ पहुंचे और सारी ख़ुशियां धूल

में मिल जाएं। या धूमधाम से नाच गानों की धमा चौकड़ी में बियाही हुई दुल्हन 9 माह के बा'द पहली ही ज़चगी में **मौत के घाट** उतर जाए। या ख़ुदा न ख़्वास्ता दूल्हा शादी से पहले या चन्द ही रोज़ के बा'द **दुन्या से चल बसे।** क्यूं कि मौत कह कर नहीं आती। एक दर्दनाक वाक़िआ़ पेशे ख़िदमत है,

इ़ब्रत नाक ह़िकायत

एक शख़्स जिस का घर क़ब्रिस्तान के क़रीब था। उस ने अपने बेटे की शादी के सिल्सिले में रात को नाच रंग की मह़फ़िल क़ाइम की, लोग नाच कूद और धमा चौकड़ी में मश्ग़ूल थे कि क़ब्रिस्तान का सन्नाटा चीरती हुई दो अ़-रबी शे'रों पर मुश्तमिल एक गरज दार आवाज़ गूंज उठी, जिन का तरजमा है : **"ऐ ना पाएदार नाच रंग की लज़्ज़तों में मुन्हमिक होने वालो ! मौत तमाम खेलकूद को ख़त्म कर देती है। बहुत से ऐसे लोग हम ने देखे, जो मसर्रतों और लज़्ज़तों में ग़ाफ़िल थे, मौत ने उन्हें अपने अहलो इ़याल से जुदा कर दिया।"** रावी कहते हैं..... **ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **की क़सम ! चन्द ही दिनों के बा'द दूल्हा का इन्तिक़ाल हो गया।**

(شرح الصدور، ص ٢٤٧ دارا لكتب العلميه البيروت)

आह ! मौत की आंधी आई और ठट्ठा मस्ख़रियों, धमा चौकड़ियों, संगीत की धुनों, लत़ीफ़ों और क़हक़हों, शाद मानियों और मसर्रतों, मचलते अरमानों और ख़ुशी की तमाम राह़त सामानियों को उड़ा कर ले गई ! दूल्हा मियां मौत के घाट उतर गए और ख़ुशियों भरा घर देखते ही देखते मातम कदा बन गया ।

तुम ख़ुशी के फूल लोगे कब तलक तुम यहां ज़िन्दा रहोगे कब तलक

इस ह़िकायत को पढ़ कर शादियों में बेहूदा फ़ंक्शन बरपा करने वालों और उन में शरीक हो कर गाने बाजे की धुनों पर हंस हंस कर ख़ुशी के ना'रे बुलन्द करने वालों की आंखें खुल जानी चाहिएं ।

याद रखिये ! ह़ज़रते **सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मन्कूल है, "जो हंस हंस कर गुनाह करेगा वोह रोता हुवा जहन्नम में दाख़िल होगा ।"

(مُکاشَفَۃُالقُلوب ص ٢٤٥ دارالکتب العلمیہ بیروت)

ग़ौर कीजिये ! कौन सा "जोड़ा" **आज सुखी है ?** हर जगह ख़ाना जंगी है । कहीं सास बहू में मोरचा बन्दी तो कहीं नन्द और भावज में ठीकठाक ठनी हुई है बात बात पर "**रूठ मन**" का सिल्सिला है । एक दूसरे पर जादू टोने के इल्ज़ामात, कहीं बीमार डालने के लिये धागे हैं तो कहीं

साह़िराना ता'वीज़ात, **येह सब कहीं शादियों में ग़ैर शर-ई ह़-रकात का नतीजा तो नहीं ? क्यूं कि आज कल जिस के यहां शादी का सिल्सिला होता है वहां इतने गुनाह किये जाते हैं कि उन का शुमार नहीं हो सकता ।**

दर्द भरी नसीह़त मक्तूब के आख़िर में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه आ़जिज़ी फ़रमाते हुए दर्द भरी नसीह़त फ़रमाते हैं : **हाथ जोड़ कर मेरी म-दनी इल्तिजा है कि घर के जुम्ला अफ़राद दो रक्अ़त नमाज़े तौबा अदा करें और गिड़गिड़ा कर अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की बारगाह में तौबा करें और आयन्दा के लिये हर त़रह़ के गुनाहों से बचने का अ़ह्द करें ।**

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

"शोहर" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की जानिब से शादी शुदा औ़रत के लिये **मीठे मीठे आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चार ख़ुश्बूदार इर्शादात

मदीना 1 क़सम है उस की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है अगर क़दम से सर तक शोहर के तमाम जिस्म में ज़ख़्म

हों जिन से पीप और कच-लहू बहता हो, **फिर औ़रत उसे चाटे तब भी ह़क़्क़े शोहर अदा न किया।**

(مسندامام احمد رقم الحدیث ۱۲۶۱۴ ج ۴ ص ۳۱۸ دارالفکر بیروت)

मदीना 2 औ़रत अगर पन्जगाना नमाज़ की पाबन्दी करे, माहे र-मज़ान के रोज़े रखे, अपनी शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करे और अपने शोहर की इत़ाअ़त करे तो **जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल होगी।**

(المشکٰوۃالمصابیح رقم الحدیث ۳۲۵۴ ج ۲ ص ۹۷۲۲)

मदीना 3 शोहर ने बीवी को (हम बिस्तरी के लिये) बुलाया उस ने इन्कार कर दिया और उस (शोहर) ने गुस्से में रात गुज़ारी तो **फ़िरिश्ते सुब्ह़ तक उस औ़रत पर ला'नत भेजते रहते हैं** और दूसरी रिवायत में है जब तक उस से राज़ी न हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस औ़रत से नाराज़ रहता है।

(صحیح مسلم رقم الحدیث ۱۴۳۶ دار ابن حزم بیروت)

मदीना 4 (बीवी) बिग़ैर इजाज़त उस (शोहर) के घर से न जाए अगर ऐसा किया तो जब तक तौबा न करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और फ़िरिश्ते उस पर ला'नत करते हैं। अ़र्ज़ की गई, अगर्चे शोहर ज़ालिम हो ? फ़रमाया : अगर्चे ज़ालिम हो।

(کنزالعمال رقم الحدیث ۴۴۸۰۱ ج ۱۶ ص ۱۴۴ دارالکتب العلمیہ بیروت)

बात बात पर रूठ कर मयके चली जाने वाली औ़रतों के लिये मुन्दरिजए बाला ह़दीस में काफ़ी दर्स है।

"चल मदीना" के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से ज़ैल के सात म-दनी फूल भी अपने दिल के म-दनी गुलदस्ते में सजा लें اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ घर अम्न का गहवारा बन जाएगा

मदीना 1 सास और नन्द से किसी सूरत में भी न बिगाड़ें इन की **ख़ूब ख़िदमत** करती रहें। अगर बिलफ़र्ज़ त़न्ज़ वग़ैरा करें तो भी ख़ामोश रहें।

मदीना 2 सास अगर बिलफ़र्ज़ कभी झिड़कियां दे तो अपनी **मां का तसव्वुर** कर लें कि वोह डांट रही हैं तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सब्र आसान हो जाएगा।

मदीना 3 अगर आप ने कभी सास के ग़ुस्से हो जाने पर **जवाबी ग़ुस्से** का मुज़ा-हरा किया तो फिर "निभाव" मुश्किल तरीन है।

मदीना 4 सुसराल की "**बद सुलूकी**" की फ़रियाद अपने मयके में करना, सामने चल कर तबाही का इस्तिक़्बाल करना है। बस येह आप के इम्तिह़ान का मौक़अ़ है लिहाज़ा सब्र के साथ साथ ज़बान पर मज़्बूती के साथ क़ुफ़्ले

मदीना लगा लें । यक़ीनन "**एक चुप सो को हराए**" जवाब में सिर्फ़ दुआ़ए ख़ैर करें । वरना ग़ीबतों, तोह्मतों और बद गुमानियों जैसे जहन्नम में ले जाने वाले कबीरा गुनाहों का त़वील सिल्सिला चल पड़ेगा ।

मदीना 5 उ़मूमन आज कल सुसराल की त़रफ़ से बहू पर "जादू करती है, अपने शोहर पर क़ाबू कर लिया है ।" वग़ैरा वग़ैरा इल्ज़ामात लगाए जाते हैं । ख़ुदा न ख़्वास्ता आप के साथ ऐसा मुआ़-मला हो जाए तो **आपे से बाहर हो जाने के बजाए ह़िक्मते अ़-मली और सब्र से काम लें ।**

मदीना 6 उन के सामने हरगिज़ मुंह न बिगाड़ें । बरतन ज़ोर से न पछाड़ें, बच्चों को इस त़रह़ न डांटें कि उन को वस्वसा आए कि हमें सुनाती और कोसती है, धोने पकाने के काम में भी फुरती दिखाएं ।

मत़लब येह कि नजासत को नजासत से (या'नी इल्ज़ाम को हंगामे से) पाक करने के बजाए (ह़िक्मत व हुस्ने अख़्लाक़ के) पानी ही से पाक किया जा सकता है ।

इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **आप अपने सुसराल की मन्ज़ूरे नज़र हो जाएंगी और** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **ज़िन्दगी भी ख़ुश गवार होगी ।**

मदीना 7 सुसराल के ह़क़ में दुआ़ से ग़फ़्लत न करें कि दुआ़ से बड़े बड़े मसाइल ह़ल हो जाते हैं। **सौमो सलात** की पाबन्दी करती रहें, शर-ई पर्दा लाज़िमी किया करें। **याद रहे !** देवर व जेठ से भी पर्दा है। अपने घर में "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" का दर्स जारी करें, ज़बान पर क़ुफ़्ले मदीना लगाते हुए ख़ामोशी की आ़दत डालें कि ज़ियादा बोलने से झगड़े का अन्देशा बढ़ जाता है। फ़ेशन परस्ती के बजाए सुन्नतों का रास्ता इख़्तियार करें कि इसी में भलाई है।

ख़ुदा न ख़्वास्ता कहीं आप को येह वस्वसा आए कि क्या सिर्फ़ औ़रत ही मर्द की ख़िदमत करती रहे या मर्द पर भी कोई ज़िम्मादारी है ? चुनान्चे ज़ैल में इस का जवाब मौजूद है।

शोहर के लिये मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दो मीठे मीठे इर्शादात पेशे ख़िदमत हैं

मदीना 1 तुम्हें अपनी **बीवी का कामकाज** करने से ऐसा सवाब मिलता है गोया तुम ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में स-दक़ा दिया।

(کنزالعمال رقم الحدیث ٤٥١٣٠ ج١٦ ص١٦٩ دارالکتب العلمیه بیروت)

मदीना 2 जिस किसी की **तीन बेटियां या तीन बहनें हों** और वोह उन के साथ हुस्ने सुलूक करे तो जन्नत में दाख़िल होगा।

(سُنن ترمذی رقم الحدیث ١٩١٩ ج٣ ص٣٦٦)

ह़िकायत

बीवी की बद अख़्लाक़ी पर सब्र कीजिये और अज्र कमाइये, ह़ज़रते सय्यिदुना **अबुल ह़सन ख़रक़ानी** رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का शोहरा सुन कर **एक शख़्स** सफ़र कर के ज़ियारत के लिये आप के घर ह़ाज़िर हुवा। दस्तक दी और आमद का मक़्सद बताया। आप की ज़ौजा ने बताया वोह जंगल में लकड़ियां लेने गए हैं और फिर वोह ह़ज़रत عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃ की बुराइयां करने लगी। **वोह शख़्स** परेशान हो कर जंगल की त़रफ़ गया। देखा तो दूर से एक शख़्स आ रहा है और उस के पीछे एक शेर चला आ रहा है जिस की पीठ पर लकड़ियों का गठ्ठा लदा हुवा है, आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने दूर ही से फ़रमाया, "मैं ही **अबु लह़सन ख़रक़ानी** हूं, **अगर मैं अपनी बीवी का बोझ बरदाश्त न करता तो क्या शेर मेरा बोझ उठा लेता ?**"

(मुलख़्ख़स अज़ तज़्किरतुल औलिया मुतर्जम, स. 365)

बद नसीब शख़्स

वोह शख़्स यक़ीनन बड़ा बद नसीब है जो अपने बाल बच्चों की सुन्नत के मुत़ाबिक़ तरबिय्यत नहीं करता, अपनी बीवी को ह़त्तल मक़्दूर पर्दे वग़ैरा के अह़काम नहीं सिखाता। बल्कि अज़ख़ुद फ़ेशन के सामान मुहय्या करता,

बल्कि मेकअप करवा कर बे पर्दा स्कूटर पर बिठाता, शॉपिंग सेन्टरों की ज़ीनत बनाता और मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों में फिरता फिराता है । **आह ! आख़िरत का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा ।**

करे ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की आख़िर में अहम हिदायात

अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता सास बहू के माबैन **इख़्तिलाफ़** हो जाए तो उस में **इन्साफ़** का दामन हाथ से न जाने देना, मां को हरगिज़ मत झाड़ना । इसी त़रह़ मां की फ़रियाद सुनते ही बीवी पर मत टूट पड़ना, **सिर्फ़ और सिर्फ़ नरमी से काम लेना** कहीं **ऐसा न हो कि बाज़ी हाथ से जाती रहे और रोने के दिन आएं ।**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने कैसे कुढ़न भरे अन्दाज़ में गुनाहों के मुज़िर अ-सरात और ख़ाना बरबादियों के अस्ल अस्बाब की त़रफ़ हमारी तवज्जोह दिलाई । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **से दुआ है कि वोह हमें अपने शबो रोज़ ऐन शरीअ़त के मुत़ाबिक़ गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।** (اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم)

अल्लाह व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم) की रिज़ा वाली ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये

अपने अपने शहरों में होने वाले "दा'वते इस्लामी" के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये। अह़मदआबाद में सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ **फ़ैज़ाने मदीना,** त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर में हर जुमा'रात को नमाज़े इ़शा के बा'द शुरूअ़ हो जाता है।

"दा'वते इस्लामी" के सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये बे शुमार म-दनी क़ाफ़िले शह्र ब शह्र, गाउं ब गाउं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकट्ठा करें। बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** से **"म-दनी इन्आ़मात"** का कार्ड और **"म-दनी तोह़फ़ा"** नामी रिसाला ज़रूर ह़ासिल कीजिये।

हर इस्लामी भाई और हर इस्लामी बहन इस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करे। इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये रिसाले में दिये हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ इस का फ़ॉर्म पुर कर के अपने अ़लाक़े के दा'वते इस्लामी के

ज़िम्मादार को हर माह जम्अ़ करवाएं। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप की ज़िन्दगी में ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर म-दनी इन्क़िलाब बरपा होगा।

और अगर हम इस्तिक़ामत के साथ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से दमे आख़िर तक वाबस्ता रहे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम भी ईमान व आ़फ़िय्यत की मौत पा कर क़ब्र, ह़श्र, मीज़ान और पुल सिरात़ पर हर जगह **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से काम्याब हो कर सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त का मुज़्दए जां फ़िज़ा सुन कर जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم का पड़ोस पाने की सआ़दत पा लेंगे।

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी

सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को बिल ख़ुसूस शादी वाले घर में सर परस्त या दूल्हा, दुल्हन तक पहुंचा दीजिये। और अपने मर्ह़ूमों के ईसाले सवाब के लिये ज़ियादा ता'दाद में ख़रीद कर तक़्सीम कर के ख़ूब सवाबे जारिया कमाइये।

म-दनी मश्वरा जो किसी का मुरीद न हो उस की

ख़िदमत में म-दनी मश्वरा है कि इस ज़माने के सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबा-रका को ग़नीमत जाने और बिला ताख़ीर इन का मुरीद हो जाए।

शैत़ानी रुकावट येह बात ज़ेह्न में रहे ! कि चूंकि हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मुरीद बनने में ईमान के तह़फ़्फ़ुज़, मरने से पहले तौबा की तौफ़ीक़, जहन्नम से आज़ादी और जन्नत में दाख़िले जैसे अज़ीम मनाफ़ेअ़ मौजूद हैं। लिहाज़ा शैत़ान आप को मुरीद बनने से रोकने की भरपूर कोशिश करेगा। आप के दिल में ख़याल आएगा... मैं ज़रा मां बाप से पूछ लूं, दोस्तों का भी मश्वरा ले लूं, ज़रा नमाज़ का पाबन्द बन जाऊं, अभी जल्दी क्या है, ज़रा मुरीद बनने के क़ाबिल तो हो जाऊं फिर मुरीद भी बन जाऊंगा।

मेरे प्यारे इस्लामी भाई ! कहीं क़ाबिल बनने के इन्तिज़ार में मौत न आ संभाले लिहाज़ा मुरीद बनने में ताख़ीर नहीं करनी चाहिये, यक़ीनन मुरीद होने में नुक़्सान का कोई पहलू ही नहीं, दोनों जहां में اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा ही फ़ाएदा है। अपने घर के एक एक फ़र्द बल्कि अगर एक दिन का बच्चा भी हो तो **उसे भी सरकारे ग़ौसे आ'ज़म**

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ **के सिल्सिले में दाख़िल कर के मुरीद बनवा कर क़ादिरी र-ज़वी अ़त्तारी बना दें।**

श-ज-रए अ़त्तारिय्या اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने एक बहुत ही प्यारा "श-जरा शरीफ़" भी मुरत्तब फ़रमाया है। जिस में गुनाहों से बचने के लिये, काम अटक जाए तो उस वक़्त, और रोज़ी में ब-र-कत के लिये क्या क्या पढ़ना चाहिये, जादू टोने से हिफ़ाज़त के लिये क्या करना चाहिये, इसी त़रह़ के और भी बहुत से "अवराद" लिखे हैं। इस श-जरे को सिर्फ़ वोह ही पढ़ सकते हैं जो **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के ज़रीए क़ादिरी र-ज़वी अ़त्तारी सिल्सिले में मुरीद या त़ालिब होते हैं। इस के इलावा किसी और को पढ़ने की इजाज़त नहीं। लिहाज़ा उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के पेशे नज़र, जहां आप ख़ुद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ से मुरीद होना पसन्द फ़रमाएं वहां इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए अपने अ़ज़ीज़ो अक़्रिबा और अहले ख़ाना, दोस्त अह़बाब व दीगर मुसल्मानों को भी तरग़ीब दिला कर मुरीद या त़ालिब करवा दें।

मुरीद बनने का त़रीक़ा बहुत से इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस बात का इज़्हार करते रहते हैं कि हम

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद या त़ालिब होना चाहते हैं, मगर हमें त़रीक़ए कार मा'लूम नहीं, तो अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं, तो अपना और जिन को **मुरीद या त़ालिब** बनवाना चाहते हैं उन का नाम, आख़िरी सफ़्हे पर तरतीब वार बमअ़ वल्दियत व उ़म्र लिख कर **''मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या'' फैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर अह़मदआबाद, गुजरात ।** के पते पर रवाना फ़रमा दें, तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिल्सिलए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या में दाख़िल कर लिया जाएगा। इस के लिये नाम लिखने का त़रीक़ा भी समझ लें। म-सलन लड़की हो तो **मैमूना बिन्ते मुह़म्मद बिलाल** उ़म्र तक़रीबन चार साल और लड़का हो तो **अह़मद रज़ा बिन मुह़म्मद बिलाल** उ़म्र तक़रीबन छ साल, अपना मुकम्मल पता लिखना हरगिज़ न भूलें (पता अंग्रेज़ी के केपीटल ह़ुरूफ़ में लिखें)

मस्अला : आ'ला ह़ज़रत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''ब ज़रीअ़ए क़ासिद या ब ज़रीअ़ए ख़त़ मुरीद हो सकता है।'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द : 12, सफ़ह़ा : 294)

पैग़ामे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

ख़बरदार ! जब भी आप के यहां (शादी), **नियाज़** या किसी क़िस्म की तक़रीब हो, नमाज़ का वक़्त होते ही कोई मानेए शर-ई न हो तो इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए तमाम मेहमानों समेत **नमाज़े बा जमाअ़त के लिये मस्जिद का रुख़ करें ।** बल्कि ऐसे अवक़ात में दा'वत ही न रखें कि बीच में नमाज़ आए और सुस्ती के बाइ़स مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जमाअ़त फ़ौत हो जाए । दो पहर के खाने के लिये **बा'दे नमाज़े ज़ोहर** और शाम के खाने के लिये **बा'दे नमाज़े इ़शा** मेहमानों को बुलाने में ग़ालिबन बा जमाअ़त नमाज़ों के लिये आसानी है । **मेज़बान, बावर्ची, खाना तक़्सीम करने वाले वग़ैरा** सभी को चाहिये कि वक़्त हो जाए तो सारा काम छोड़ कर बा जमाअ़त नमाज़ का एहतिमाम करें । शादी या दीगर तक़रीबात वग़ैरा और **बुज़ुर्गों की "नियाज़" की मसरूफ़िय्यत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की (हुक्म कर्दा) "नमाज़े बा जमाअ़त" में कोताही बहुत बड़ी ग़-लती है ।** (माख़ूज़ मिन "फ़ातिह़ा का त़रीक़ा" अज़ अमीरे अहले सुन्नत, स. 24, मक-त-बतुल मदीना)

सवाबे जारिया

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये और अपने मर्ह़ूमों के ईसाले सवाब के लिये ज़ियादा ता'दाद में ख़रीद कर तक़्सीम कर के ख़ुद भी सवाबे जारिया कमाइये ।

''क़ादिरी अ़त्तारी'' या ''क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या'' बनवाने के लिये
नाम व पता बॉल पेन से और बिल्कुल साफ़ लिखें। ग़ैर मश्हूर नाम या अल्फ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं। अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की ह़ाजत नहीं।

नम्बर शुमार	नाम	बिन या बिन्ते	वालिद का नाम	उ़म्र	मुकम्मल पता (दुकान या मकान नम्बर गली नम्बर गाउं या शहर ज़िलअ़ फ़ोन नम्बर वग़ैरा सब लिखें)

म-दनी मश्वरह : इस फ़ॉर्म को मह़फ़ूज़ कर लें और इस की मज़ीद कॉपियां करवा लें। उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तह़त जहां आप ख़ुद मुरीद होना पसन्द फ़रमाएं। वहां इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए अपने अ़ज़ीज़ो अक़्रिबा, अहले ख़ाना व दोस्त अह़बाब और दीगर इस्लामी भाइयों को भी बैअ़त के लिये तरग़ीब दिला कर मुरीद करवा दें। और यूं अपनी और दूसरे मुसल्मानों की आख़िरत की बेहतरी का सामान करें।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिकाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عزوجل इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عزوجل" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आमात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عزوجل

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ओफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुहोल कोम्पलेक्स, A.J. मुहोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net